

Marwar College, Darbhanga

Handwritten Lecture

Page No. 01
Date 21/04/20

By
Dr. S.K. Suman, Asst. Prof., Dept. of Psychology,
Fon,

Class - B.A Part-I, Psychology (H), Paper-I
Ch-5. Memory and Forgetting (स्मृति एवं विस्मरण)

Introduction :-

प्रिय: हम यह सुनते हैं कि अमुक व्यक्ति की स्मृति बहुत अच्छी है। अमुक व्यक्ति को-को भूल जाता है। कई व्यक्ति अपनी स्मृति में कई सूचनाओं को एक साथ रख लेते हैं। कई बार हम वर्तमान की बातों को भी भूल जाते हैं। कई घटनाओं को हम जीवन भर याद रखते हैं ना। कई बार हम अपने निकटस्थ मित्रों के नाम भी भूल जाते हैं। यह सब स्मृति का खेल है।

स्मृति और विस्मृति हमारे दैनिक जीवन में निरन्तर प्रतिदिन होने वाले अनुभव के विषय हैं।

Meaning :- मनो वैज्ञानिकों के अनुसार - "स्मृति" एक मानसिक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति सूचनाओं को भण्डारण कर लेता है और इन सूचनाओं का

पुनरुद्धार सामान्यतः संचयन (Recall) के रूप में होता है। एक प्रकार से सूचनाओं का पुनरुद्धार ही स्मृति है।

स्मृति - चिन्तन, कल्पना, संवेदना आदि की तरह एक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपने आतीता अनुभव (Past experience) को या शरीरों को वर्तमान चिन्तना में लाते हैं और पहचानते हैं।

अतः स्मरण प्रक्रिया के लिए पूर्व के अनुभव से या पूर्व से सीखना आवश्यक है। कालान्तर में जब हम उन अनुभवों या शिक्षण को अपनी चेतना में लाते हैं या पुनर्विचार करते हैं तो चेतना में लाने और पहचानने की मानसिक प्रक्रिया ही स्मरण कहलाती है।

स्मरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है और इसे कल्पना, चिंतन, संश्लेषण, मध्यस्थीकरण आदि प्रक्रियाओं से मिश्र करना पड़ेगा ही है।

Process of ~~Learning~~ Memory

OR

Components of Memory

स्मरण क्रिया में चार प्रक्रियाएँ होती हैं या चार तत्त्व विद्यमान रहते हैं -

① अधिगम या स्थिरीकरण (Learning) :-

मैं किसी विषय का अनुभव और शिक्षण आवश्यक है। अतः अनुभव या शिक्षण स्मरण की पहली प्रक्रिया है जो स्थिरीकरण के अन्तर्गत आती है।

2. धारण (Retention) :-

अनुभव में आने वाले या सीखे हुए विषय को संजोने की प्रक्रिया धारण में आती है जो कि स्मरण की दूसरी प्रक्रिया है।

3. प्रत्यावाहन या पुनः स्मरण (Recalling) :-

धारण में संजोये विषय को चेतना में लाना प्रत्यावाहन कहलाता है जो कि स्मरण की

नीली सक्रिय है।

④. परिचिन्ता (Recognition) :-

पहचानना -

अनुभव या शिक्षण को पहचानने है जो यह
Recognition की सक्रिय कहलाती है जो कि
स्मरण की चौथी सक्रियता है।

Definitions of Memory (स्मृति की परिभाषाएं) :-

कुई अनादिकालिक या स्मृति या स्मरण को
विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है उनमें
से कुछ परिभाषाओं का निम्न निम्न है -

बुद्धवर्ध के अनुसार -

"सीखे हुए ज्ञान का सीधा
उपयोग स्मृति है।"

एकॉउट के अनुसार - "स्मृति एक आदर्श पुनरावृत्ति है।"

टीच पीठ नन के अनुसार -

"हमारे अनुभवों को संचित
करके रहने वाली शक्ति ज्ञान चेतना से युक्त
होती है, ज्ञान स्मृति कहते हैं।"

रायवर्न के अनुसार - "अपने अनुभवों को संचित
रखने और उनका वापस
करने के कुछ समय बाद चेतना के अग्र में
लाने की जो शक्ति हमें होती है उसी को स्मृति कहते हैं।"

हिलगार्ड के अनुसार - "स्मृति वह भावसिद्ध
सक्रियता है जिसमें अतीत से संबंधित ज्ञान,
अनुभव या कौशल का पुनः स्मरण
किया जाता है।"

सिटीकनस इ इंडिया - "स्मृति का अर्थ है कि वर्तमान
 में उन अनुसंधानों या तथ्यांक प्रमाणों को प्रदर्शित
 करना, जिससे उनके पुष्ट हो सके थे।"

उपरोक्त परिभाषा को इतिहासकार
 से स्पष्ट होना चाहिए। स्मृति का अर्थ है ~~वर्तमान~~
 शारीरिक और मानसिक जादिल ~~स्मृति~~ है जिसमें
 तीन प्रकार की ~~स्मृति~~ हैं 1. मानसिक अवस्थाएं
 (Images) 2. संकेत (Encoding) 3. संकेतों की पुनः
 स्मृति या वापस
 स्मृति का अध्ययन कर व्यक्ति इसे विभिन्न
 रूपों या संकेतों के रूप में ~~नैतिकान्त~~ में ~~स्मृति~~
 करता है। स्मृति - चिन्तों के रूप में Encoding करता है।
 (जो) जिसे पुनः स्मृति की कहा जाता है। जिसमें हम
 रिहाई विवरण तथा संकेतों की अहम दृष्टिकोणों
 को ~~स्मृति~~ (Storage) :- स्मृति में सांकेतिक सूचनाओं
 एवं स्मृति को कुछ समय
 के लिए संग्रहित कर रखा जाता है। तथा
 1. पुनः प्राप्ति (Retrieval) :- पुनः प्राप्ति में
 संग्रहित कर रखे गए सांकेतिक सूचनाओं का
 प्रत्यावाह (Access) कर सका, उपयोगिता प्रमाणों
 मनोविज्ञान में स्मृति के अर्थ का
 विवेचन दो प्रकार से किया गया है - 1. कई
 मनो वैज्ञानिक स्मृति को एक ही दिशि वाली ऐसी
 अवस्था मानते हैं जिसमें सूचनाओं की प्रक्रिया
 अज्ञ-अज्ञ स्तर पर होती है। 2. दूसरे अनेक
 मनो वैज्ञानिक स्मृति को बहु अवस्था प्रक्रिया की
 रचना के रूप में मानते हैं।